IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

' बालक का सामाजिक विकास'

डॉ सोमेश नारायण सिंह

(विभागाध्यक्ष शिक्षा संकाय हंडिया पी जी कॉलेज हंडिया प्रयागराज)

(Development)-व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी होता है लेकिन जन्म से कोई भी व्यक्ति सामाजिक नही होता है औऱ ना ही असामाजिक। समय एवं पर्यावरण के अनुसार व्यक्ति धीरे धीरे सामाजिक होता जाता है अर्थात व्यक्ति में सामाजिक एवं असामाजिक गुण आने लगते हैं। अर्थात जन्मोपरांत बालक का सामाजिक विकास उसके पारिवारिक, पास पड़ोस, समाज आदि के अनुरूप धनात्मक एवं ऋणात्मक गुणों के साथ विकास की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है जिसके आधार पर हम उसके सामाजिक कार्यों का मूल्यांकन कर उसे सामाजिक या असामाजिक व्यक्ति के रूप मे वर्गीकृत करते हैं।

सामाजिक विकास का अर्थ- सामाजिक विकास का अर्थ बालक का सामाजिक करण करना बालक की जन्मजात शक्तियों और प्रवृत्तियों एवं उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में रहकर ही होती है।उसकी समस्त शक्तियों का विकास,आचरण एवं व्यवहार मैं परिमार्जन सामाजिक वातावरण में ही संभव है इसीलिए कहा जाता है कि जिसमें सामाजिकता का विकास होता है उसमें एक दूसरे से मिलने जुलने सामाजिक गतिविधियों में सहयोग करने, सामाजिक कर्तव्यों का पालन करने, एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करने की प्रवृत्ति देखी जाती है

परिभाषा- " सामाजिक विकास एक प्रक्रम है जिसके द्वारा व्यक्ति में उसके समूह के आदर्शों के अनुरूप वास्तविक व्यवहार विकसित होता है।" (चाइल्ड 1950)

- " सामाजिक प्रत्याशियों के अनुरूप व्यवहार की योग्यता का अर्जन सामाजिक विकास कहा जाता है" (हरलॉक 1978)
- " सामाजिक विज्ञान सीखने की वह प्रक्रिया है जो समूह के स्तर परंपराओं तथा रीति–रिवाजों को अपने अनुकूल अपने आप को डालने तथा एकता मेलजोल और पारस्परिक सहयोग की भावना भरने में सहायक होती है" (फ्रीमैन एवं शोवेल)

सामाजिक विकास की अवस्थाएं – सामाजिक विकास को निम्नलिखित अवस्था में बांटा गया –

1. **आरंभिक बाल्यावस्था –** आरंभिक बाल्यावस्था का कॉल 2 से 6 वर्ष का होता है इस उम्र में बालक घर के बाहर के लोगों तथा बालकों के साथ संपर्क करना सीखता है। इस अवस्था में वे अन्य बालकों के साथ समायोजन करने की कोशिश करते हैं तथा विभिन्न प्रकार के खेल खेल कर अपना सामाजिक दायरा बढ़ाते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इस अवस्था संस्था में बालक का सामाजिक व्यवहार का पैटर्न विकसित होता है मनोवैज्ञानिकों ने एक अध्ययन में पाया कि जो बालक ढाई वर्ष की अवस्था में सामाजिक रूप से अधिक सक्रिय थे वह 7.5 वर्ष की अवस्था में अन्य बालकों की तुलना में अधिक सक्रिय पाए गए इससे यह स्पष्ट होता है कि ढाई साल की उम्र की सामाजिकता साडे 7 साल की उम्र की सामाजिकता की भविष्यवाणी थी आरंभिक बाल्यावस्था में बालक के सामाजिक व्यवहार को निम्नांकित रूपों में देखा जाता है –

   अनुकरण Imitation- बालक सामाजिक व्यवहार अनुकरण द्वारा सीखता है बालक उन सभी व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार का अनुकरण करता है जिन्हें सामाजिक समूह द्वारा मान्यता प्राप्त होती है अर्थात उन सभी लोगों का व्यवहार जो सामाजिक मानदंडों पर अधिकतम श्रेष्ठ होता है इस तरह बालक अपने व्यक्तित्व में वैसे सामाजिक शील गुणों को विकसित कर लेते हैं जिनसे उन्हें उस वर्ग के सामाजिक अभियोजन में काफी मदद मिलती है

   प्रतिद्वंदिता Rivalry – आरंभिक बाल्यावस्था के बालकों में सामाजिकरण पर प्रतिद्वंदिता का प्रभाव पड़ता है जब एक बालक किसी दूसरे बालक को अपना प्रतिद्वंदी समझता है तो वह अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने के लिए सामाजिक नियमों या मानदंडों पर अधिक ध्यान देता है और इन से अधिक से अधिक अनुभव प्राप्त करने की कोशिश करता है हर स्वरूप इस तरह के बालकों का सामाजिक विकास तेजी से होता है

   सामाजिक अनुमोदन की (Desire for social approval)- बालक में जब वयस्क तथा अपने साथियों से स्वीकृत तथा अनुमोदन प्राप्त करने की इच्छा अधिक होती है तो वह समाज द्वारा की गई अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश करते हैं तथा साथ ही साथ क्रियात्मक पाठ को पूरा कर लेने की भरपूर प्रयास करते हैं जिसके कारण उनका सामाजिकरण तेजी से होता है

   सहानुभूति (Sympathy)- बालक में सहानुभूति दिखाने का व्यवहार तब तक नहीं उत्पन्न होता जब तक वह किसी अन्य व्यक्ति को सहानुभूति दिखाते हुए नहीं देख लेता बालक जब दूसरों के प्रति सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करता है जैसे किसी की मदद करना तो उसमें यह सामाजिक गुण विकसित हो जाते हैं मनोवैज्ञानिकों का मत है कि बालक जितना अधिक सामाजिक संपर्क खेल मैं स्थापित कर पाते हैं उनमें सहानुभूति पूर्वक व्यवहार के उत्पन्न होने की उतनी ही अधिक संभावना होती है

मित्रता (Friendship)- आरंभिक बाल्यावस्था के बालकों में मित्रता की भावना बहुत तेजी से विकसित होती है वह वे दूसरे बालकों के साथ मिलकर कुछ कुछ काम करते हैं खेलते हैं तथा कभी-कभी सिर्फ दूसरे बालकों के लिए ही मदद के रूप में कार्य कर देते हैं इन दोनों ही परिस्थितियों में उनका सामाजिक विकास तेजी से होता है

इसके अतिरिक्त बालक में सहयोग का शब्द व्यवहार प्राण कार्ड कार्यों के द्वारा उनका सामाजिक विकास तेजी से होता है इसकी नर 19 78 के अनुसार ऐसे बालको में वर्ग में शिक्षकों तथा साथियों द्वारा अधिक प्रशंसा मिलने के कारण नेतृत्व संबंधी गुड का तेजी से विकास होता है

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास (Social Development in Childhood)- यह अवस्था 6 वर्ष से प्रारंभ होकर पर आवश्यक चलती है इस अवस्था में बालकों का विद्यालय में एडमिशन हो जाता है और बालक औपचारिक रुप से शिक्षा ग्रहण करना आरंभ कर देता है जिस कारण से इस अवस्था के बालकों पर शिक्षकों एवं शिक्षा मनोविज्ञान खों के सिद्धांतों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है इस अवस्था को टोली उम्र भी कहा जाता है इस अवस्था के बालक पराया हम उम्र पोलियो के रूप में रहते हैं और डोली अनुसार क्रियाएं करते हैं इस उम्र के बालकों में सामूहिक अनुमोदन की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है वह अपने मित्रों के साथ व्यवहार वार्ता पोशाक आदि की प्रशंसा एवं स्वीकृति प्राप्त करना चाहते हैं वह सामाजिक अनुमोदन प्राप्त करने के लिए अगर किसी कारणवश उनके घर का मानक स्कूल का मानक तथा टोली के मानक में टकराव होने पर वे टोली के पक्ष में ही अपना विचार रखते हैं

इस उम्र के बालक अति संवेदनशील होते हैं वह अपने माता-पिता तथा उनके साथियों का ध्यान अधिक आकर्षित करते हैं जिससे उनको सामाजिक मान्यता प्राप्त हो सके इसलिए बालक उनके प्रति काफी संवेदनशील होते हैं

उम्र का बालक सुझाव के प्रति संवेदनशील होता है वह कभी-कभी दूसरे के सुझाव को आसानी से मान लेता है बालक में यह गुण दिखाई देता है जिससे कि दूसरे का ध्यान उसकी तरफ आकर्षित हो सकें और कभी कभी सुझाव के विपरीत भी बालक के प्रतिक्रिया दिखाई देती है

बाल्यावस्था में बालक में है प्रतिस्पर्धा का गुड दिखाई देता है पहली प्रतिस्पर्धा चोली के भीतर सबसे अधिक सम्मान पाने की होती है और दूसरी प्रतिस्पर्धा बालकों की एक टोली से दूसरे टोली के बीच होती है तथा तीसरी बालकों की टोली तथा समाज की संगठित एजेंसियों के बीच होती है इन तीनों तरह की प्रतिस्पर्धा ओं के कारण बालक में सामाजिकरण अलग-अलग ढंग से दिखाई पड़ता है इसके अतिरिक्त बालकों में अच्छा क्रीडा कौशल भी दिखाई देता है इस उम्र का बालक खेलकूद में अन्य बालकों के साथ काफी सहयोग एवं ईमानदारी का भाव दिखाता है उसमें उत्तरदायित्व की भावना का भी काफी गुण पाया जाता है भूषण तथा बोल 1966 नए अध्ययन में पाया कि उत्तरदायित्व एक ऐसा सामाजिक व्यवहार है जिसकी शुरुआत घर में बालकों के प्रारंभिक प्रशिक्षण से होती है ऐसे बालक जिनमें उत्तरदायित्व का तोहार घर में अच्छी तरह विकसित हो जाता है वह अपनी टोलिया में भी ठीक ढंग समायोजित रहते हैं और समाज के सातवीं आपसी तालमेल अच्छा होता है उनमें सामाजिक शूज की प्रवृत्ति भी पाई जाती है उन्हें सामाजिक परिस्थितियों में ठीक ढंग से प्रत्याशी प्रत्यक्षण करने उनका अर्थ समझने साथ-साथ संबंधित व्यक्तियों को ठीक ढंग से समझने की सोच विकसित हो जाती है

किशोरावस्था में सामाजिक विकास (Social Development in Adolescence)- इस अवस्था में किशोर एवं किशोरियों का सामाजिक परिवेश अत्यंत विस्तृत हो जाता है शारीरिक मानसिक तथा संवेगात्मक परिवर्तन के साथ साथ उनमें सामाजिक परिवर्तन भी तेजी से होता है जिसके फलस्वरूप उनमें सामाजिक वातावरण में समायोजन करने की क्षमता तेजी से विकसित होती है जिसके परिणाम स्वरूप सामाजिक विकास का स्वरूप निम्न प्रकार से होता है बालक समूह का निर्माण करते हैं वह समूह में अस्थाई रूप से समूह के उद्देश्य के अनुसार कार्य करते हैं किसी और और किशोरी प्राया अलग-अलग समूह का निर्माण करते हैं लेकिन उत्तर किशोरावस्था में एक साथ ही समूह का निर्माण होता है इस अवस्था में उनमें मैत्री भावना का विकास पर होता है प्रारंभ किशोर की शोरूम से तथा की छोरियां किशोरियों से लेकिन बाद में विपरीत लिंग के साथ मैत्री भाव विकसित कर लेते हैं वह अपने सर्वोत्तम वेशभूषा श्रृंगार व साज सज्जा के साथ एक दूसरे के समक्ष उपस्थित होना चाहते हैं इस अवस्था में बालक में समूह के प्रति भक्ति समूह के सदस्यों के आचार विचार वेशभूषा तौर तरीके आदि के प्रति लगाओ एवं समूह द्वारा स्वीकृत बातों को आदर्श मानकर उनका अनुसरण करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है सामाजिक गुणों का विकास भी इसी अवस्था में अधिकतम होता है किशोर में उत्साह सहानुभूति सहयोग सद्भावना नेतृत्व आज सामाजिक ग्रुप विकसित होने लगते हैं एवं उनकी इच्छा समूह में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने की होने लगती है सामाजिक परिपक्वता की भावना विद्रोह की भावना विकसित हो जाती है बाल्यावस्था में बालक में व्यवसाय चयन के प्रति रुचि उत्पन्न होती है प्राया किशोर अपने व्यवसाय का चुनाव कर अधिक से अधिक धन अर्जन करने का प्रयास करते हैं। वे बदलते वैश्विक परिवेश में सशक्तिकरण की ओर उन्मुख होते रहते हैं बालक में वह मुख्य प्रवृत्ति है इसी अवस्था में विकसित होती है किशोर किशोरियों को अपने समूह के क्रियाकलापों तथा सामाजिक क्रिया में भाग लेने के अवसर मिलते हैं जिससे उनमें बहिर्मुखी रुचियां विकसित होती हैं वे लिखने पढ़ने संगीत कला समाज सेवा दूरसंचार जनसंपर्क अधिकारियों में रुचि लेने लगते हैं बालक में राजनीतिक दलों का प्रभाव भी इसी अवस्था में सबसे ज्यादा पड़ता है वह राजनीतिक दलों की विचारधारा से प्रभावित होकर किसी राजनीतिक या सामाजिक दल के अनुयाई बन जाते हैं एवं दल के सम्मान प्रतिष्ठा प्रशंसा प्राप्त करने के लिए हमेशा समर्पण भाव से जन कल्याण के कार्य करते रहते हैं

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक-

- मनोवैज्ञानिकों का मत है कि सामाजिक विकास पर वंशानुक्रम का भी प्रभाव अवश्य पड़ता है वंशानुक्रम व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक विकास के साथ-साथ उसके सामाजिक विकास को भी प्रभावित करता है अनेक सामाजिक और व्यक्ति को वंश परंपरा के रूप में अपने माता पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों से प्राप्त होती है जिसके आधार पर वह अपने सामाजिकता का निर्वहन करते हैं
- सामाजिक विकास को प्रभावित करने में सहायक तथा मानसिक विकास का भी घनिष्ठ संबंध होता है सारे देश से स्वस्थ तथा विश्व विकसित मस्तिष्क वाले बालक में सामाजिकरण सादिक दोस्त वाले बालकों से अधिक होता है बीमार अपंग सारिक देश से अन आकर्षक विकृत मस्तिष्क वाले अल्प बुद्धि वाले तिरस्कृत रहने वाले बालकों का सामाजिक विकास अपेक्षाकृत सामान्य बालकों से कम होता है शारीरिक एवं मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति में समायोजन की भी समस्या अधिक पाई जाती है ।
- **परिवार का भी बालक के समाजीकरण पर प्रभाव पड़ता है परिवार का वातावरण संस्कृत सदस्यों का आचरण शिक्षा पारिवारिक संरक्षण सहयोग पालन पोषण रोजगार आर्थिक स्तर बालक के समाजीकरण को प्रभावित करता है बालक अपने परिवार एवं माता-पिता तथा अन्य सदस्यों के समान सामाजिक व्यवहार करने का प्रयास करता है**
- बालक है समाजीकरण में विद्यालय का भी काफी महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि परिवार के बाद विद्यालय यह कैसा स्थान है जहां बालक सबसे अधिक समय देता है एवं ज्ञानार्जन करता है विद्यालय में बालक अन्य बालकों के अध्यापकों के एवं परस्पर साथियों के संपर्क में रहकर सामूहिक क्रियाकलाप राधा भाग लेता रहता है जिससे उसका सामाजिकरण होता है विद्यालय में बालक को सामाजिक संबंध बनाने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं जिसका उसके सामाजिकरण पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है बालक के समाजीकरण पर भाषा का भी उचित प्रभाव पड़ता है भाषा ही एक ऐसा

माध्यम है जिसके द्वारा बालक अपनी आवश्यकताओं इच्छाओं आज को दूसरे तक पहुंचा सकता है एवं दूसरे की आवश्यकताओं इच्छाओं को समझ सकता है हर लाख 1978 ने यह बताया कि भाषा बालकों को उपयुक्त सामाजिक व्यवहार उपयुक्त सामाजिक परिस्थिति में करने में मदद करती है ।

संदर्भ

. अदावल, एस.बी.–भारतीय शिक्षा की समस्याएं तथा प्रवित्तियाँ

- अल्तेकर, ए.बी.–एडुकेशन इन एंशिएंटइंडिया
- ओड, एल.के.–शिक्षा के नूतन आयाम
- विकिपीडिया

डॉ सोमेश नारायण सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय

हंडिया पी.जी.कॉलेज हंडिया प्रयागराज

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation